

DPN 6826

समाधि सप्पु SAMĀDHI SAPHŪ

Title :

Run. No. 7551

Cat. No.

Micro. No.

Subject समाधि Samadhi

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 21.5 X 10.3

Folios 26 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor आनन्दभद्र वज्राचार्य / पूर्णकाजी ताम्राकार

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Ananda Bhadra Bajracharya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Purna Kaji Tamrakar.

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

(१) गुरु म० ५ ल - न्हावांगु १ फोलियो महु।

P.T.O.

(२) धनंरि देगुरि माय (समाधि)

Beg. ॐ नमो श्री चक्रसम्बराय ॥ ३ ॥ ॐ आ. हूं ॥ ३ ॥

Col. अद्य जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे प्रातिपदायां तिथौ मृगशिरा नक्षत्रे गंध योगे
मघाकर्का मृदुर्ते बुधवासरे विद्य राशि सावेतरि मिथुन राशिगते
चन्द्रमासे ॥ चते दिनस च समाधि सपुदि चोय सिद्ध याडा
दिन वेला जुलो शुभं ॥ शुभ संवत् ९३२ म्ति चते जुरो शुभं ॥
नेपात मण्डप श्रीकान्तिपुर महानगरे असोक मण्डप स्थाने
भोतादिति त्वार वास्थित तोराधर धर्मात्मा भाजुधं भ्राता रत्न
मुनि प्रमुख पादर भाजु प्रमुखत सपरिवार प्रमुखत च समाधि
सफू रत्न मुनिया असीव मनो वांछान चोचका जुरो ... ॥
लेखक नेपात काष्ठ मण्डप महानगरे कीर्ति पुण्य महावज्र धातु
महाविहारया श्रीव जार्च आनन्द मदन चोमाओ विद्या जुरो शुभं ॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30



उँवजादकहूँ॥ उँवजगामयहूँ॥ उँवजरुमसुलखसर्वतथगतवज
 सुवर्धुधायखाहा॥ ॥ किखानकास्यमलुलधिव॥ ॥ उँदानंलगमय
 सेवुनावसहिर्गंशीलंयसनायनकाकिरूडंयिपिपिकानयनयवीर्यंकि
 यास्वपनंधानेककृषीभकविरुकवर्धपहासुनखाकयायतापात्रसि
 तावउववरुगकुलामूनमलुलंरुवकुनकवर्धसर्वयालोर्ध्विमुक
 सुवमनुजविशिष्टधनुवहयिकाकिधनकनकःसमृद्धजायगवाज

विवगुहसिन्कायकमानंकना॥ उँसुखसर्वतथगतज
 नाधियुंरुखाहा॥ उँवदार्कविमप्रखाहा॥ ॥ वाहागसखान
 विकिधनतर्भूपक॥ ॥ उँवजसुखसर्वविद्यानूद्ययहूँ॥ खानमलु
 यागादुयकवविकय॥ उँवजरुमहूँसर्वतथगतधियानाधियुंरु
 खाहा॥ उँवजसुवर्धुधायखाहा॥ धनमलुलधिवखानवाय॥ उँरुम
 हासधायववनम॥ उँकिमधायववनम॥ उँहूंसुखमयवनम॥

दथसग ॥ उं यं पूर्वविदीहायनमः ॥ हुवनम ॥ उं वं आदि पायनमः ॥
खडासग ॥ उं लं अयवगजवदियायनमः ॥ थडानम ॥ उं वं उरुगु
नवनमः ॥ जवसग ॥ उं यं उयदिपायनमः ॥ यवकां ॥ उं ग ॥ उयदिपा
यनमः ॥ खवकाथकानसग ॥ उं लाउयदियायनमः ॥ जडाथथकानस
ग ॥ उं वाउयदियायनमः ॥ जवकाथक ॥ उं य ॥ गजयत्तायनमः ॥ हु
वनम ॥ उं व ॥ अयवत्तायनमः ॥ यवस ॥ उं ल ॥ यवत्तायनमः ॥ थ

वनम ॥ उं व ॥ मित्रत्तायनमः ॥ जवस ॥ उं य ॥ खज्जत्तायनमः ॥ खवका
नम ॥ उं ग ॥ मित्रत्तायनमः ॥ खवथथका ॥ उं लावकत्तायनमः ॥ ज
वथथकनसग ॥ उं वा ॥ सर्वनधनस्थानमः ॥ जवकथक ॥ उं वं ॥ अयन
मः ॥ हुवन ॥ उं स ॥ सूर्यायनमः ॥ थवन ॥ उं ज ॥ अं ग्रीवजगुत्रुस्थानमः
॥ दथसग ॥ यथापहायपूजा ॥ उं व ॥ जयधस्वाहा ॥ उं व ॥ जगधस्वाहा ॥ उं
व ॥ जधूपस्वाहा ॥ उं व ॥ उदीयस्वाहा ॥ उं व ॥ जनेवयस्वाहा ॥ हुस्वानलख

कासंमलमहायकं ॥ ३ ॥ वदुवत्तमयमवूमद्वीधापह्मरिनेनाना
यत्नसमाकीर्णतयनूरुवदयायिनगुवृथावृद्धधर्मसंदेष्टाश्चनथेव
वनिर्यागयानिरावनसंपूर्णतत्तमलुर्ल ॥ ॥ ३ ॥ आशुर्लंष्टीमिद्वजस
त्वसहुवृववववववकमलायसुमाहानावरासर्नकयायहनसहं ॥ नम
सुगुनभानभारुक्काहंलानमस्यामिधीगुवृनाथयसिधमययययसा
दकिवहीरुविनात्मगतत्वतपरायविकवश्यरुगाधकायावहभकुना

विदशीसवियासमञ्जसुमेनमरुगयगुगुत्तयायउंनभावृद्धायगु
यवनमाधर्मायगायननभासंयायमर्दगभकिरूपिसननंनभसर्वव
हनतस्यामिधर्मवृजिनरापिगंसंघंक्षीलसम्यन्त्रतत्तगयतमा
नभायतत्तगयमहावर्णसर्वयनिदिहाम्ययगुनभायजगत्युर्ध्ववृद्धवा
क्षिदधमनशशाधोक्षेसंजर्णयासिवृद्धधर्मगह्मरुमहवाक्षीविरुक्
याम्यवभाषयार्थयसिद्धम ॥ ३ ॥ दयादयामिधर्मवजवाधिविरुनिम

जयामिऊरुसर्वस्त्वानुष्टुप्त्रिष्यवत्रधाधियात्रिकावृक्षावययंज
 गगादिगाय।दहानांसर्वपापानांपूज्यानाधनमादनांकुगापवासं
 विद्यामिःश्रुत्याष्टांगयाधर्ममयाबालनमूरुहायकिश्चिन्त्यायमाश्चि
 गंपरुह्यावद्यसावद्ययहृष्णावद्यमवय॥गदययंयह्यामयनाथ
 नामगुणास्तिगहाकृगाः३लिदुःखरीतयनिप्रत्ययूनःपूनः॥अथम
 थपथगनयमिगृह्णतुनायकाःनरुदकमिदंनार्थनकरुवीपूनर्म

यायथगतथागागायाश्रुत्याःइहकसंमर्कवृद्धवृद्धाननवृद्धवृ
 षाजाननियंध्यकिगकुसत्रमूलंजजातिकंजनिकायजादसजस्व
 शर्व॥जलस्रकृदीजयाधर्मगयासंमिदंनगथाहमनूमाअयथग
 तथगगायामनूरुवायासंम्यक्वाध्नीतथहयविष्ममयामि॥गथा
 ममाननसमाधिकालंशलाकस्यदृश्वः३सखादयनुरुहंयकुरु
 यःसदामुःशकिरुमयकाहीवजगथेवरानादृष्टधृगाःनूस्मतामाग

भावायुश्च कथञ्जगत्पागभावा सर्वयकार्यजगतादिना यकूर्यामिष
 संसृखदिनाय उंहीं ॥ अत्र मनपायुर्नपनिष्कृत्वा हा ॥ वलिहालव
 युहुयुम ॥ ॥ वलिहावना ॥ नमायं कालदावायुमधुलंगद्वयवि
 र्यकालनश्रुतिमधुलंगद्वयविश्रु कालनसूर्यमधुल ॥ मं उ हनी
 ययुलिकायाववस्ति नष्टुक्कयमरा ॥ नगगरकादियविपूतिनं ।
 वृं अं डी रवं हं लां मां पां तां वं का च जस्ति नय च अमृत पच अयदी पयूप

निष्ठाया ॥ उँ गं नू उ मू डा धृ स्ति ग ॥ ला क पा ल मू डा इ र्ध थ नू ॥ उँ ॐ न्या य
स्वा हा ॥ उँ य मा य स्वा हा ॥ उँ व नू ष म य स्वा हा ॥ उँ क्व व ना य स्वा हा ॥ उँ जू रू म
य स्वा हा ॥ उँ नो धृ थ स्वा हा ॥ उँ वा यू व स्वा हा ॥ उँ ॐ ष म ना य स्वा हा ॥ उँ
उ र्ध व क्क ष स्वा हा ॥ उँ सूर्या ग रा धि य न स्वा हा ॥ उँ व न्दान कृ णा धि य
नि स्वा स्वा हा ॥ उँ जू र्ध पृ थि व स्वा हा ॥ उँ ना ग व स्वा हा ॥ उँ जू सू त्र स्वा स्वा
हा ॥ उँ सर्व दि ग ला क पा ल स्वा स्वा हा ॥ **थ न मू डा ॥ प त्र श य हा व पू ज ॥**

॥ ॐ ॥ दिवजिसरुदवसंधेऽमचऽगृह्णुवलि विमस्तु अलजम
नूजिगरुयमिश्चऽआयापयिषायुधवाधियमिश्चऽॐ नरुताधियमिश्च
यवाडुर्ध्वचार्कयितामरुध्वदवासमस्तुऽॐ चनागधवाधवागुक्त
गलेस्तुनायमिपमिक्तकनिवदयकुगृह्णुगुस्तासविनामहीन्यासयु
गमेगीधूपवलिपूर्यवलिऽॐ दयकमसरुस्तंशुगकुस्वाहा ॥ ॥ ॐ
नभाजलपयाय ॥ चन्द्रवज्रपानयमहाकाशयमहाडक्षकटशेखरा

[illegible]

पूर्णकलितवयवपूर्णवडीगरीमयानाविज्ञानज्ञानपूर्णनिदिगणय
 यत्रमूर्त्तियक्ष्मणः॥ ॥**सगाकव**॥ ॥**उं**वजसंखसमयमनूयाल
 यवजसंखनसुगिष्टगच्छमभरवसगाथाभरवजूनवकाभरव
 स्याथाभरवसर्वसिद्धिमययंयुसर्वकर्मसुखमविरुधीयंकु
 हंरुहुरुहारागवानसर्वगतथागतवजसाममुखवजिरुवमहास
 मयसंखणा॥ ॥**विसर्ज**॥**उं**कृतावसर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्ता

यथानूयागागच्छध्वंविषययूनवायगमनायच॥**उं**॥**हं**वज
 मधुली॥ ॥**मधुलथियकवजकाय**॥नमस्तुजकजकिनीदान
 पतिगुप्तकस्य॥**धु**धर्मस्वरावतजुधनागुक्तपूजार्थप्रदस्यमधु
 लीकनविक्रववर्जयित्वागुचिरसमाहितं॥ ॥**थनंविदु**
वियाय॥ ॥**उं**नभाप्रीवकसम्भवाय॥३॥**उं**॥**हं**श्रीमद्वजस
 हुववचवहाकमलायसम्यज्ञानावरासनकवायनभारुनमस्तु३

नमानमरुहाहंलानमस्यामिधीगुपुनाथपुसीदम।वधरुवादिसमगंस
 कावहीयतिसयंसुहुवृजत्यधदहममायुहानसंरवश।धीमगवडाडा
 कायडाकिनीवकवर्हिधीयक्रहानागीकानायगाधयजगमानमह्या
 वंगावडाडाकिन्यस्थितसंकल्पवन्दनालाकाकृथापवत्यनृकावगिर्यान
 मशमदा॥मृतिपीकालनहृन्मगावयन॥ ॥धीकावमद्ययाहानह
 कालरुहुगुन्यवृकावमयगतवृहंककालनकाचिधिविगं।उंसर्वसला

धवहाहगाहुकवर्हिधिरुजसंभवमात्मानंरावयन।नदनूकवधध
 नंदक्रिहाहमजाकावहासूर्यमधुलंवासरुकाकालनचन्द्रमधुलं॥
 उंसंनमशद्विजुर्वस्वाहा॥उंवावटदहंसांरुद१हं॥उंवसांयांजीमांहं
 जीहंरुद१स्वाहा॥उंरुस्वाहावज।उंसांस्वाहाद्य७॥उंवजसत्वसंग
 हागवजत्रमनूरुवजधर्मग्रायिनउंवजकर्मकुलाहंउंआश्टकि
 उंरुवंहा॥द्य७भयसंवाधिविधान॥गीवजहंरुवृकहंरुदजाकि

नीजालसम्बन्धस्वाहा ॥ उँ र्वं जा हं रूट् ॥ संखाधिष्ठान ॥ उँ र्वं शुभाह सर्व
विद्यानूत्ताय यत् ॥ स्वस्वमन्त्रं यथाधिष्ठान ॥ उँ वं ऊ यथा स्वाहा ॥ ॐ स्वा
दि ॥ उँ जू ॥ उँ जू कात्रा मूर्ख सर्व धर्माहममाश्रयनत्वा उँ जू ॥ ॐ
ट् स्वाहा ॥ वलिज्जुधिष्ठाता ॥ उँ म् स्रगिष्ठ वज्र स्वाहा ॥ मधुलयाजधिष्ठाता ॥
मन्त्रं धन ॥ उँ ह ॥ उँ जू र्वं स्वाहा ॥ यूनः पीत्वा हन्यतां रात्रयम् ॥ उँ ॥
कात्रं यमराजनमांकात्रं यमराजनमांकात्रं यमराजनमांकात्रं यमराजनमांकात्रं

कायकृद्विगुजावजवजहस्तं । तन्संयुक्तयागधमहागालाद्विरु
 तंयत्नम् ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

वायव्यं रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥ उर्वरां यात्रीं भाजं रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥ उर्वरां
 नमस्कृतं ॥ उर्वरां गमनं रुद्रं ॥ उर्वरां नमस्कृतं ॥ तमास्वदयथाका
 लदायुमलुलागस्यायत्रिकुर्वन्कायं आकाशयकलुक्कलं कलं कायक
 आलिकालियकिणयलुक्कयककृक्कवर्णमृच्चार्य ॥ नदकयपयिनन
 यकयमवजवाग्विष्टुविष्टुक्कयान् ॥ नृपस्वध्वेजाजनयदनास्वध्व
 जसूर्यसहस्रस्वध्वमनृध्वजसस्वायस्वध्वजवाजः ॥ विज्ञानस्व

ध्वजसस्वः सर्वतथागतग्रीहृक्कवजः ॥ चक्रवाभादावजः ॥ अगयाद
 यवजः ॥ यात्रायात्रीयावजः ॥ वक्रयात्रागवजः ॥ स्यपस्यमसूर्यवजः ॥ स
 र्वायकसंधासूर्यवजः ॥ पृथिविधनुयातनिः ॥ अस्त्राधनुमात्रतीक्ष्ण
 धनुयाकर्षणीवायुवधनुः ॥ यमनृध्वजीः ॥ आकाशधनुयमहाल
 नीः ॥ पूरुषाजालिकालियकिमध्वर्कायपविनामसूर्यमलुलं ॥ तस
 ध्वर्कायपविनामनरागवककृक्कवर्णमृच्चार्य ॥ नृपस्वध्वेजाजनयदनास्वध्व

वज्रघण्टाध्वजद्विगितियाख्याखर्जतर्जनीयाहाहनीयाख्याउमत्रखर्जगः
यलुर्मूर्खकृष्णमजकपीतकाकाह्मकृष्णउजूकाह्मह्ममाह्मना
ह्मजकाह्मकलाह्मपीगायमजउजिकृष्णपीगायमइगितितजकाय
मइह्मजकह्ममायममथनीह्ममह्मका॥उंगतासंस्कृनीशकंरुद॥
॥उंगृकृशकंरुद॥उंगृकृपयशकंरुद॥उंगृनयाह्मशगवन्
विद्यात्राजकंरुद॥गताज्जकाह्मजकायद्वयविनगसूर्यमण्डलंग

सध्वक्तं कायविश्ववज्रक्तं कायविशिष्टं गण्डस्मिनायवज्ररुलं पमा
नवजकनिकायूयैयध्वगनेवज्रमयीरुमिविराद्य ॥ ३ ॥ मयनीवज्री
रववज्रवध्वक्तं ॥ ३ ॥ वज्रपाकायक्तं वक्तं ॥ ३ ॥ वज्रपञ्चलक्तं पक्तं ॥ ३ ॥
वज्रवीणां नक्तं रक्तं ॥ ३ ॥ वज्रसज्जायगां संगं ॥ ३ ॥ वज्रकालानलार्कक्तं
॥ ३ ॥ कायज्जुष्टदिगपाकायवहिकृपनिवसिगान् ॥ ३ ॥ आदि विद्यान् द्रव्य
यकीययदृष्टा ॥ ३ ॥ यद्यद्याटय २ सर्वद्रव्यानक्तं रक्तं रुद्रुकीलय २ सर्वपा

पान हूं हूं रुट्टं वज कीलय वज धन आहायय गिसर्व विद्य विनायका
नोकाय वाक विरुवजान कीलय हूं हूं रुट्ट ॥ उं वज मूल वज कीलय
माकाटय २ हूं हूं रुट्ट ॥ गति निर्विघ्न सावयन ॥ ॥ गगन स्वदयसु
हंका गं वरिष्ठि र्जगदर्थ कृत्वा जूक निरु गुवेनंग त्वा गगन सु अनादि स
सिद्धि १ गुया द श्मत्त क गीव क संव वरु गवर्क र गव नी समा यन्त्र सना
लुल यय द्यन ॥ गगा ह किज वरिष्ठि माला शिवा रुष्ट हान वज माका हा अरि

मुख मरि संयुक्त समस्त समय तलप विश्व सम वरिष्ठि लय मना मयी रि १ प्र
जाद वी रि य पूजयन ॥ रुं ३ ॥ उं श्री वज रुद्र वरु क प व व सत्का राय पाय
अर्थ ज्ञा व मन पा क्रम ही प नी रु स्वाहा ॥ उं ४ हूं वं हा ४ ॥ **॥ प्रथम्या १४ ॥**
उं श्री वज रुद्र वरु क हूं रुट्ट जा किनी जाल संव वं स्वाहा ॥ उं जी ४ रुद्र हूं हूं रु
ट्ट ॥ उं उं उं उं सर्व वृद्ध जा किनी य वज वरु नी य वज व नी य व नी य हूं हूं रुट्ट
रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ उं म हा वज जा किनी य हूं रुट्ट ॥ उं लाभ हूं रुट्ट ॥ उं ख रु

नाहं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं वा वि विरुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥
 उं का काह्य हं रुद्र ॥ उं उ नृ काह्य हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥
 उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥
 उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥
 उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥
 उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥ उं नृ निग्राय हं रुद्र ॥

॥ यं वा यदा नृ पूजा ॥ या दहा लाभ ॥ यदा

विनाम निविदाह
 दाहिना कृपा

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30



दशुनायाय
सुखमयमक

मलायनमार्कनमस्तु ३ नमानमस्तु ४ रक्षा रत्नानमस्तु ५ मिथी गु वृ नार्थय
सिदम ॥ ६ त्यादर गंगरि नाव वद ह धा वि ज क प रा वि ज य नि म्बु धा गु
वृ पि धी या गि नी गु हा गे हो स्स म लं क ता धिं म र्च य या मि ६ ग नं ज न नी
ज न नी ॥ ७ धि ती धू न्य ग न न कं धी व ज द वी नू पं मालं व न दा कालं ज ग न म
र्च कृ षी ध्या मी नि नि धय क न ॥ ८ ग ॥ ९ उं स क्क नि २ कूं रू ट् ॥ १० उं गृ क्क २
कूं रू ट् ॥ ११ उं गृ क्का प य २ कूं रू ट् ॥ १२ उं ज्ञा न य हा र ग व न वि धा ना ज कूं रू ट् ॥

॥ ॐ ह्यननदिगवर्धकृत्वा ॥ पाण्डु ॥ धन ॥ उं हं हा ॥ जीं जूं रं खं स्वाहा ॥
 पूनपीत्वा ॥ धृन्नातां रावयन् ॥ कीं ॥ का प्रदाय प्रसाजने मां का प्रदामामकि
 कृष्णं द्विजुजां विजयज रुक्मां कृष्णं का प्रदाय प्रसाजने मां का प्रदामामकि
 कृष्णं द्विजुजां विजयज रुक्मां कृष्णं का प्रदाय प्रसाजने मां का प्रदामामकि
 यागदामहायालादविश्वं नयहधन ॥ पूनरुहा ॥ जीं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥
 उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥
 उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥
 उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥ उं ॥ जूं ॥ रं ॥ खं ॥ स्वाहा ॥

मकरजकयवदलकमलंधात्वाः॥ उंवजवागदीयेरुंरुट् ॥ उंहांया
मिनियरुंरुट् ॥ उंयांमिनीयरुंरुट् ॥ उंभांभादिनीयरुंरुट् ॥ उंसंसं
वात्रिणीयरुंरुट् ॥ उंहांसंगुहिनीयरुंरुट् ॥ उंरुट्चन्द्रिकायरुंरुट्
॥ मुनि ॥ वजवागदी ॥ यामिन्यांखलभादिनीरुगवनीसंवात्रिणीसंगु
हीनीरुट्चन्द्रिकाषट्पागिनीगौदवर्नर्ज ॥ ४३ ॥ नमसर्वदा ॥ ॥ उंवं
हांयांहांभांहांहांरुंरुंरुट् ॥ ॥ तगावामकरगुहीगडधनरु

[illegible]

20
15
10
5
0 cmts. 5 10 15 20 25 30

निमकुमुद्वार्युदिलसत्रात्रुसमध्यपीतसवाहृदयायविवासदक्रि
क्षयर्ललिकालियकाउर्द्धिगस्कनपत्रिवृत्तदिनहामधुलमध्यव
कायंत्रकंगत्यत्रिधमनरगवनीशीवजवाग्रीसंध्यासिंधूत्रवर्हृष्ट
ज्ञात्रदीगकाधस्वरावमूलवकुंदक्रिधकालास्वोरावनादीमुखीवामपा
र्द्धधृतरवदांगवामकत्रिजकपूर्वकपालधवादक्रिधयष्टीगर्द्धनल
वजकर्द्धिधवाथाउहावर्षागनीगनिर्वहनाहित्रसिनीलदम्हालिमालाव

स्त्रिगंमूकिनीलकुंकत्रहित्रात्रुहाप्रमिमुखंभण्णयंसर्वत्रुधिगाननांसत्र
सनत्रसिंयाहानदात्राजंक्रनाष्ट्रज्ञात्रवीत्रविरत्सहाभ्यत्रोदरयानकंक
त्रुक्षरुगहभकिनवनाद्यत्रसान्निगंयडीकुलुलकहित्रायकमखलासूग
लिरिशेषभूडामृदिनीसफार्कक्रिधभरत्रद्यस्मिपराध्वनात्मनाजुर्द्धप
र्यीकनृयस्त्रिगारुगवनीशावथग ॥ ॥ **आकर्षण** ॥ निर्माधचक
स्त्रिगवकायंत्रस्त्रिमालाशिवाकनिरुखवनवर्लीनीहानदवमिमाकृषा

समयदवर्त्तकहावयत् ॥ रूं३ ॥ याद्यादि ॥ ॐ अ॥ १ ही १ धी वज्र वा नादी प
वज्रसक्ता गायया अर्घ्यं आचमनं धातुर्धनं पितृस्वाहा ॥ ज१ रूं१ वं१ १ १
॥ पृथ्व्यानाम ॥ ॐ ॐ ३ सर्ववृद्धं जाकिनीयवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ ॐ व
ज्रवर्त्तनीयवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वज्रवैराचनीयवज्रपृथ्व्या
१ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ म धा ॥ ॐ ॐ ३ दियानवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ हुं ॐ
॥ ॐ पूर्णगिरीयाहावज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ जडास ॥ ॐ कामरूपिनी

यवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ थडान ॥ ॐ श्रीदत्तकायवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र
स्वाहा ॥ खडास ॥ ॐ धर्मकायवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ जवकाथकनस
॥ ॐ संशुगकायवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ जडाथथकानस ॥ ॐ निर्मा
नकायवज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ खडाथथकनस ॥ ॐ महासूखकाय
वज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ खडाकाथकन ॥ ॐ अ॥ १ नंदावर्त्तिवज्रपृथ्व्या
१ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ पखली ॥ पखलपहावज्रपृथ्व्या १ रूं१ रुद्र स्वाहा ॥ ॐ हा स्वाहा ॥

ॐ वज्रसत्त्वसंग्रहवज्रतलमनूरुप्रत्यादि X ॥ सुनि ॥ नलो गधी वज्र वा राही
स्यादि X ॥ **गर्घ्य** ॥ ॐ जू आ हूं रुद्र ॥ ॐ हूं रुद्र स्यादि X ॥ ॥ न मा
कायमुखमस्तकस्वस्तिकं वामावरुनगुमकुमककुर्गध्यायान् ॥ तदनु
दवीकमलादयनाविम ध्वनकप्रधर्मादयामध्वर्यकात्रक ॥ ॐ ॐ ॐ सर्व
वृद्धाकिनीयवज्रवर्हनीयवज्रवेपावनीय हूं हूं हूं रुद्र रुद्र रुद्र स्वा
हा ॥ ॥ ॐ निमकुं धमधुलर्षीकत्रदिक्स्थामिगितयकीणयप्रस्था

धकार्यविनस्यगच्चकुं वामनागि वगगमानानिधलायमं यश्च ॥ न मा
दवीचाधुत्रिपूर्यपदीयवलाजाकल्पमानं महासुखचकुंदविरुवध
श्रवदनिगधप्रमासायिगं यश्च ॥ ॐ निचधुत्रिवकुं ॥ ॥ यश्च
निर्मानचकार्धकालवृपिनी ॐ रुद्र विरुद्र सिंगनादादवीकृपासुधालार्ग
पुष्टाकाकुत्रकप्रखार्धगतकायधर्मसंगराचकुमृष्टियमहासुखम
यायनया कालमुखमहासुखमयस्वस्तिकं यव ॥ ॐ महासुखचकुंगत्व

वलि विलिन सद्धि दयन कृण्वन् वद मृगद वहा स्मानं सखापयन्ति
सुहृन्मवा विन्ध्य पद विष्णु मन् ॥ आः वाः यः यः लाः यः सुः गः ॥ ० ॥
ॐ नि विरुक्रमथा गः ॥ ० ॥ अरिषकं X ह्यादि X ॥ यं वाय दान पूजा
यं वा रिषक काय ॥ हृष्टी वज्र विलाशिनी नाम कार्यरुर्ग वस्व ॥ ० ॥
आः पाः यः यः लाः यः सुः गः ॥ ० ॥ धन रुक्म धन ॥ ० ॥ गगः सखा
कन म गिती रा वितांगुली पत्र ॥ वीक वज्रं सूर्य माका गा धि किर्ग ॥

इव स ॥ गत्येव वाम रुक्मिणी लिष्य पद्म पत्रा कात्र गुः कात्र जं वरुम
का गा धि किर्ग विरावा ॥ गथा र्म धृता रुक्म गत्येव दवी नूपा रु
न सत्वे की रुर्ग विर्विष्य ॥ ० ॥ धन रुक्म ॥ धन जाय ॥ धन याय ॥
॥ अरुक्म कात्रु वृज्जु माहि अमरु विसा नू गति जू वृष्टी रू जू लि मि
ऊँ ॐ वा ॐ नि सा नू य दय द म हा हानं सर्व वृद्धं सह र वन् ॥ हूं हूं हूं
हा हा हा अरु र व स्वा हा ॥ ० ॥ अथवा ॥ अं व वि व म मी प र्व न ग स्वा हा ॥

गः॥ ६४५ ॥ तमाञ्जलिकालिपविहगवन्दसूर्ययादि॥ ० ॥
 अं वज्रजलिजहं वं हां वज्रवाग्राही समग्रसर्वदृष्टिदा॥ ६४६ ॥ वलि
 माला॥ उं कत्र २ कत्र २ वं ध्र २ गाय २ यादि॥ ० ॥ ॥ उं ख २ स्वादि २
 सर्वयक्राक्रसरुगयगयादि॥ ० ॥ ॥ पंः लाः धंः सुः नः ॥ वलि॥
 पूजा॥ मधुलविधिर्धूपूजा॥ धनं लिख्यपूजास्नानच्छालनस्यैरा
 वना॥ धूपादिविधिर्धूपूजा॥ यधर्मा॥ ० ॥ पंथापरायपूजा॥ शानाक्रय॥

॥ ६४७ ॥ पीथदिपूजा॥ उं पीथयपीथयस्वाहा॥ उं कृणायकृणायस्वा
 हा॥ उं श्चन्द्रायश्चन्द्रायस्वाहा॥ उं मलायकमलायस्वाहा॥ उं ममभनय
 ममभनायस्वाहा॥ ० ॥ ॥ पीथयपीथय० कृणायकृणय० ममभनाधिनाधि
 नावीनवीन० वीसर्वरुकिर्गयदमाम्यहं॥ गद्ययगाक्रियगुधाय
 युक्तविकल्पकल्याङ्गिर्गुह्यहाविहा॥ वासनावावसविमक्यागि
 हाविरावरावयनभामुयागिनि॥ ० ॥ ॥ उं वृषस्तुर्वर्त॥ उं वदना

[illegible]

यावनेकुलाङ्गनामूककङ्काशिलावर्निसंन्धासिन्दूरवर्णशावन्दली
 कलिलोद्वयीं ॥ २ ॥ यच्चमृदाशिलश्चरुश्चक्षरवर्णांगरुषिणीक
 ष्ववज्जकवागार्यावन्दलीवज्जविलाशिनि ॥ ३ ॥ मृदायच्चध्रुवाय
 वीमृदुमालाविरुषिर्गालीलाहास्यंमुखीशीर्मावन्दनेलाक्कसन्दर्पि
 ॥ ४ ॥ यन्निमानाम्मुखरुज्ज्वलीवृन्दानकट्टिकावच्चिपूष्पिविद्याक
 कांधायवन्दलीशिवरुयंकरी ॥ ५ ॥ गगविगगवोरुवागवा

नियमसर्वं यदि जगत् श्रुत्वा नमस्य विवाचयमसर्वं नथ समाधिसक
 यत्नमनियोजनीयमनावाच्छनवाचकाश्चाथ गयार्थं ध्यानजगमा
 नानासि कलपद्विसिद्धिकामनार्थं सकवृद्धिकामनार्थं दत्ताकषेध
 र्यसाधार्थं यत्र माक्रसूखावनिमवाप्नुयात् सर्वजगतीश्वरं ॥ १॥
 लखकन्यालकाष्टमधुपमदानगन्त्रीर्लिप्सुधमहान्वेजधामुमहा
 विहाययात्रीवजाधार्यजानन्दरुद्रनवायाववियाश्चाश्वरं ॥ १॥

॥ लोशानियायानिनाम्नि ॥ • ॥ ऐलाडकजलाडकयूषकंदरुवन्धी
मूर्खदम्भनदातव्यमर्खवर्दनिपूषका॥५॥ ॐ ॥ शुभ ॥ स्यागशुभ ॥



20
15
10
5
0

cmts.

5

10

15

20

25

30